683

Total Pages : 4 **Roll No. ----------**

MASL-202

गद्य एंव पद्य काव्य

एम0ए0 संस्कृत (एम0ए0एस0एल0–12 / 16 / 17)

द्वितीय वर्ष, सत्र 2021 (Winter)

Time: 2 Hours Max. Marks: 80

नोट : यह प्रश्नपत्र अस्सी (80) अंकों का है जो दो (02) खण्डों, क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बीस (20) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

[2 x 20 = 40]

P.T.O.

Q.1. निम्नलिखित श्लोकों में से किन्ही दो की ससन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

(क) अम्भो बिन्दुग्रहणचतुरांश्चातकान् वीक्षमाणाः
श्रेणीभूताः परिगणनया निर्दिशन्तो बलाकाः।
त्वामासाद्य स्तनितसमये मानयिष्यन्ति सिद्धाः
सोत्कम्पानि प्रियसहचरीसंभ्रमालिगितानि।।

(ख) पत्रश्यामा दिनकरहयस्पर्धिनों यत्र वाहाः
शैलोदग्रास्त्वमिव करिणो दृष्टिमन्तः प्रभेदात्।
योधाग्रण्यः प्रतिदशमुखं संयुगे तस्थिवांसः
प्रत्यादिष्टाभरणरूचयष्चन्द्रहांसव्रणाड्.कैः।।

(ग) तस्याः किञ्चित्करधृतमिव प्राप्तवानीरषाखं
हृत्वा नीलं सलिलवसनं मुक्तरोधेनिमम्बम्।
प्रस्थानं ते कथमपि सखे लम्बमानस्य भावि
ज्ञातास्वादो विवतजघनां को विहातुं समर्थः।।

Q.2. निम्नांकित गद्यांश में से किसी एक की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

(क) अथ "वीर गृहीतमखिंल वित्तं, पराजिता आर्य्यसेनाः, बन्दीकृता वयम्, संचतमलं यशः, इतोऽपि न शाम्यति ते क्रोधश्चेदस्माँस्ताडय, मारय, छिन्धि, भिन्धि, पातय, मज्जय, खण्डय, कर्तय, जवलयः, किन्तु त्यजेमामाकिंचित्करीं जंडामहादेव–प्रतिमाम्। यद्येवं न स्वीकरोषि तद् गुहाणास्मत्तोऽन्यदिप सुवर्णकोटिद्वयम्, त्रायस्व, मैनां भगवन्मूर्तिं स्प्राक्षीः" इति साम्रेडं कथयत्सु रूदत्सु पतत्सु विलुण्ठत्सु प्रणमत्सु च पूजकवर्गेषु; "नाहं मूर्तीर्विक्रीणामि; किन्तु भिन्ह्मि" इति

संगज्य जनतायाः हाहाकार–कल–कलमाकर्णयन् घोरगदया मूर्तिमतुत्त्रुटत्। गदापातसमकालमेव चानेर्बुदपद्ममुद्रामूल्यानि रत्नानि मूर्तिमध्यादुच्छलितानि परितोऽवाकीर्यन्ता स च दग्धमुखः तानि रत्नानि मूर्तिखण्डानि च क्रमेलकपृष्ठेष्वारोप्य सिन्धुनदमुत्तीर्य स्वकीयां विजयध्वजिनीं गजिनीं नाम राजधानीं प्राविशत्।

(ख) तदाकण्य विविध–भाव–भङ्ग–भासुर वदनो योगिराजों मुनिरांज तत्सहचराँश्च निपुणं निरीक्ष्य तेपामपि शिववीरान्तरङ्गतामङ्गीकृत्य, मुनिवेषव्याजेन स्वधर्मरक्षाव्रतिनश्चोररीकृत्य "विजयंता शिववीरः सिद्धयन्तु भवतां मनोरथाः" इति मन्दं व्याहार्षीत्।

Q.3. मेघदूत की कथावस्तु का निरूपण कीजिए।

Q.4. 'शिवराजविजय' के प्रथम निश्वास के आधार पर तात्कालिक सामाजिक व्यवस्था पर प्रकाश डालिए।

Q.5. सन्देश काव्य की परम्परा में मेघदूत का स्थान निर्धारित कीजिए।

खण्ड– ख

(लघु उत्तरों वाले प्रश्न

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए दस (10) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

[4 x 10 = 40]

P.T.O.

Q.1. अर्हस्येनं षमयितुमंल वारिधारासहस्त्रै– रापन्नर्तिप्रषमनफलाः सम्पदो ह्युत्त्मानाम्।। सूक्ति की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।

Q.2. गद्य काव्य के भेदों का वर्णन करते हुए शिवराजविजय का महत्व बताइए।

Q.3. आदर्श एंव सर्वश्रेष्ठ गीती काव्य के रूप में मेघदूत का स्थान निर्धारित कीजिए।

Q.4. के वा न स्युः परिभवपदं निश्फलारम्भ यत्नाः।। सूक्ति की व्याख्या कीजिए।

Q.5. पं0 अम्बिकादत्त व्यास की गद्य शैली पर प्रकाश डालिए।

Q.6. गीतिकाव्य की दृष्टि से मेघदूत की समीक्षा कीजिए।

Q.7. शिवराजविजय के अनुसार भगवान सूर्य का वर्णन कीजिए।

Q.8. "हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः साधुः समत्वेन भयाद् विमुच्यते" इस पद्य का सन्दर्भ सहित अनुवाद कीजिए।

———————————